Afwo Darguzar ke Fazail (Hindi)

अ़फ़्वो दरगुज़र के फ़ज़ाइल

मअ़

एक अहम्म म-दनी वसिय्यत

- फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ से अहम्म इक़्तिबासात
- दा'वते इस्लामी से बिछड़ने वालों के लिये इलाजे हुज़्न
- या अल्लाह तू गवाह रहना
- ग़ीबत के ख़िलाफ़ ए'लाने जंग
- मुआ़फ़ी तलाफ़ी कर लीजिये
- म-दनी इल्तिजा
- दुआए निस्फ़े शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी

मक-त-बतुल मदीना
(दा'वते इस्लामी)

मिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा अहमदआबाद-1. गुजरात, इन्डिया

Ph:91-79-25391168 E-mail:maktabahind@gmail.com, www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ، وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِالْمُرْسَلِيْنَ ،
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ، بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ،

अफ़्व व गुज़र की फ़ज़ीलत मअ़ एक अहम्म म-दनी वसिय्यत

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (32 स-फ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِن شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप का दिल इन फ़ज़ाइल को पाने के लिये बेचैन हो जाएगा।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ब-र-कत निशान है : ऐ लोगो ! बेशक बरोज़े क़ियामत उस की दह्शतों और ह़िसाब किताब से जल्द नजात पाने वाला शख़्स वोह होगा जिस ने तुम में से मुझ पर दुन्या के अन्दर ब कसरत **दुरूद शरीफ़** पढ़े होंगे।

(फ़िरदौसुल अख़्बार, जि. 5, स. 375, ह़दीस : 8210)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

म-दनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अ़फ़्वो दर गुज़र

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान है कि मैं नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम علیہ اَفْضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسلیم के हमराह चल रहा था और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक नजरानी चादर ओढ़े हुए थे जिस के कनारे मोटे और ख़ुरदरे थे। एक दम एक बदवी (या'नी अ़रब शरीफ़ के देहाती) ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की चादरे मुबारक को पकड़ कर इतने ज़बर दस्त झटके से खींचा कि सुल्त़ाने ज़मन, मह़बूबे रब्बे जुल मिनन عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक गरदन पर चादर की कनारे से ख़राश आ गई, वोह कहने लगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का जो माल आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास है, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हुक्म दीजिये कि उस में से मुझे कुछ मिल जाए। रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जब उस बदवी की त़रफ़ तवज्जोह फ़रमाई तो कमाले ह़िल्म व अ़फ़्व से उस की त़रफ़ देख कर मुस्करा दिये और उस को कुछ माल अ़त़ा फ़रमाने का हुक्म सादिर फ़रमाया। (सह़ीहुल बुख़ारी, जि. 2, स. 359, ह़दीस : 3149)

हर ख़ता पर मेरी चश्म पोशी, हर त़ेलब पर अ़त़ाओं की बारिश

मुझ गुनहगार पर किस क़दर हैं, मेहरबां ताजदारे मदीना

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने म-दनी आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बदवी से कैसा हुस्ने सुलूक फ़रमाया, मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दीवानो ! ख़्वाह कोई आप को कितना ही सताए, दिल दुखाए ! अ़फ़्वो दर गुज़र से काम लीजिये और उस के साथ मह़ब्बत भरा सुलूक करने की कोशिश फ़रमाइये ।

''मदीना'' के पांच ह़ुरूफ़ की निस्बत से अ़फ़्वो दर गुज़र के 5 फ़ज़ाइल

(1) ह़िसाब में आसानी के तीन अस्बाब

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि तीन बातें जिस शख़्स में होंगी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (क़ियामत के दिन) उस का ह़िसाब बहुत आसान त़रीक़े से लेगा और उस को अपनी रह़मत से जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा । (1) जो तुम्हें मह़रूम करे तुम उसे अ़त़ा

करो और (2) जो तुम से क़त्ए़ तअ़ल्लुक़ करे तुम उस से मिलाप करो और (3) जो तुम पर ज़ुल्म करे तुम उस को मुआ़फ़ कर दो।

(अल मो'जमुल औसत़, जि. 4, स. 18, ह़दीस : 5064)

(2) मुआ़फ़ करने से इ़ज़्ज़त बढ़ती है

ख़ा-तुमल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : "स-दक़ा देने से माल कम नहीं होता और बन्दा किसी का क़ुसूर मुआ़फ़ करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की इ़ज़्ज़त ही बढ़ाएगा और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये तवाज़ोअ़ (या'नी आ़जिज़ी) करे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे बुलन्द फ़रमाएगा।"

(सह़ीह़ मुस्लिम, स. 1397, ह़दीस : 2588)

(3) मुअ़ज़्ज़ज़ कौन ?

ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : "ऐ रब्बे आ'ला عَزَّوَجَلَّ ! तेरे नज़्दीक कौन सा बन्दा इ़ज़्ज़त वाला है ?" फ़रमाया : "वोह जो बा वुजूदे क़ुदरत मुआ़फ़ कर दे।"

(शु-अ़बुल ईमान, जि. 6, स. 319, ह़दीस : 8327)

(4) दुन्या व आख़िरत के अफ़्ज़ल अख़्लाक़

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं कि मैं ने सुल्त़ाने बह़रो बर, सरवरे ज़ीशान, मह़बूबे रह़मान عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ की मुलाक़ात का शरफ़ पाया तो जल्दी से हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दस्ते मुनव्वर थाम लिया और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे हाथ को जल्दी से पकड़ लिया। फिर फ़रमाया : ''ऐ उ़क़्बा ! दुन्या व आख़िरत के अफ़्ज़ल अख़्लाक़ येह हैं कि तुम उस को मिलाओ जो तुम्हें जुदा करे और जो तुम पर ज़ुल्म करे उसे मुआ़फ़ कर दो और जो येह चाहे कि उ़म्र में दराज़ी और रिज़्क़ में कुशा-दगी हो, वोह अपने रिश्ते वालों के साथ सिला (या'नी अच्छा सुलूक) करे।''

(अल मुस्तदरक लिल ह़ाकिम, जि. 5, स. 224, ह़दीस : 7367)

(5) मुआ़फ़ करो मुआ़फ़ी पाओ

सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''रह़्म किया करो तुम पर रह़्म किया जाएगा और मुआ़फ़ करना इख़्तियार करो अल्लाह

عَزَّوَجَلَّ तुम्हें मुआ़फ़ फ़रमा देगा।''

(अल मुस्नद लिल इमाम अह़मद, जि. 2, स. 682, ह़दीस : 7062)

हम ने ख़त़ा में न की तुम ने अ़त़ा में न की

कोई कमी सरवरा तुम पे करोड़ों दुरूद

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क़ातिलाना ह़म्ले की कोशिश करने वाले को मुआ़फ़ फ़रमा दिया

एक सफ़र में नबिय्ये मुअ़ज़्ज़म, रसूले मोह़तरम, सरापा जूदो करम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आराम फ़रमा रहे थे कि ग़ौरस बिन ह़ारिस ने आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़त्ल के इरादे से आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तलवार ले कर नियाम से खींच ली, जब सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नींद से बेदार हुए तो ''ग़ौरस'' कहने लगा : ''ऐ मुह़म्मद ! صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अब कौन है जो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मुझ से बचा लेगा ?'' आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''**अल्लाह**''। नुबुव्वत की हैबत से तलवार उस के हाथ से गिर पड़ी और सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तलवार

हाथ मुबारक में ले कर फ़रमाया : ''अब तुम्हें मेरे हाथ से कौन बचाने वाला है ?'' ग़ौरस गिड़गिड़ा कर कहने लगा : ''आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही मेरी जान बचाइये।'' रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस को छोड़ दिया और मुआ़फ़ फ़रमा दिया। चुनान्चे ''ग़ौरस'' अपनी क़ौम में आ कर कहने लगा कि ऐ लोगो ! मैं ऐसे शख़्स के पास से आया हूं जो तमाम दुन्या के इन्सानों में सब से बेहतर है। (अश्शिफ़ा, जि. 1, स. 106, 107)

सलाम उस पर कि जिस ने ख़ूं के प्यासों को क़बाएं दीं
सलाम उस पर कि जिस ने गालियां सुन कर दुआ़एं दीं

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दन्दाने अक़्दस शहीद करने वाले के लिये दुआ़ए हिदायत

जंगे उ़हुद में उ़त्बा बिन अबी वक़्क़ास ने मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़–लमियान, सरवरे ज़ीशान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दन्दाने मुबारक को शहीद कर दिया और अ़ब्दुल्लाह बिन क़मीअह ने चेहरए अन्वर को ज़ख़्मी और ख़ून आलूद कर दिया मगर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने

उन लोगों के लिये इस के सिवा कुछ भी न फ़रमाया कि **اَللّٰھُمَّ اھْدِ قَوْمِیْ فَاِنَّھُمْ لَا یَعْلَمُوْنَ** या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी क़ौम को हिदायत दे क्यूं कि येह लोग मुझे जानते नहीं।

(ऐज़न, जि. 1, स. 105)

सोया किये ना बकार बन्दे

रोया किये ज़ार ज़ार आक़ा

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जादू करने वाले से दर गुज़र

लबीद बिन आ'सम ने सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साहि़बे मुअ़त्तर पसीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर जादू किया और ब ज़रीअ़ए वह़्य उस का सारा ह़ाल मा'लूम हुवा मगर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस से कुछ मुवा-ख़ज़ा नहीं फ़रमाया (या'नी पूछगछ नहीं की)।

(ऐज़न, जि. 1, स. 107)

क्यूं मेरी ख़त़ाओं की त़रफ़ देख रहे हो

जिस को है मेरी लाज वोह लजपाल बड़ा है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

कितनी बार मुआ़फ़ करूं ?

एक शख़्स बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं अपने ख़ादिम को कितनी बार मुआ़फ़ करूं ?'' आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ामोश रहे। उस ने दोबारा अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं अपने ख़ादिम को कितनी बार मुआ़फ़ करूं ?'' इर्शाद फ़रमाया :''हर रोज़ सत्तर[70] बार।''

(सु-ननुत्तिरमिज़ी, जि. 3, स. 381, ह़दीस : 1956)

गालियों भरे ख़ुतूत़ पर आ'ला ह़ज़रत का अ़फ़्व व दर गुज़र

काश ! हमारे अन्दर येह जज़्बा पैदा हो जाए कि हम अपनी ज़ात और अपने नफ़्स की ख़ातिर **ग़ुस्सा** करना ही छोड़ दें। जैसा कि हमारे बुज़ुर्गों का जज़्बा होता था कि उन पर कोई कितना ही ज़ुल्म करे येह ह़ज़रात उस ज़ालिम पर भी शफ़्क़त ही फ़रमाते थे। चुनान्चे ''ह़याते **आ'ला ह़ज़रत**'' में है, मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले

सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن की ख़िदमत में एक बार जब डाक पेश की गई तो बा'ज़ ख़ुतूत़ मुग़ल्लज़ात (या'नी गन्दी गालियों) से भरपूर थे। मो'तक़िदीन बरहम हुए कि हम इन लोगों के ख़िलाफ़ मुक़द्दमा दाइर करेंगे। इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن ने इर्शाद फ़रमाया : "जो लोग ता'रीफ़ी ख़ुतूत़ लिखते हैं पहले उन को जागीरें तक़्सीम कर दो, फिर गालियां लिखने वालों पर मुक़द्दमा दाइर कर दो।" (ह़यातेआ'ला ह़ज़रत, जि. 1, स. 143, 144, मुलख़्ख़सन मक्तबए न-बविय्या, मर्कज़ुल औलिया लाहोर) मत़्लब येह कि जब ता'रीफ़ करने वालों को तो इन्आ़म देते नहीं फिर बुराई करने वालों से बदला क्यूं लें!

अह़मद रज़ा का ताज़ा गुलिस्तां है आज भी
ख़ुरशीदे इल्म उन का दरख़्शां है आज भी

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

एक अहम्म म-दनी वसिय्यत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मेरी उ़म्र ता दमे तह़रीर तक़्रीबन 60 बरस हो चुकी है, मौत लम्ह़ा ब लम्ह़ा क़रीब आ रही है,

न जाने कब आंख बन्द हो जाए। **अल्लाहु रह़मान** عَزَّوَجَلَّ के दरबारे वाला शान में सलामतिये ईमान और नज़्अ़ व क़ब्रो ह़श्र में अम्नो अमान, बे ह़िसाब बख़्शिश और जन्नतुल फ़िरदौस में म-दनी सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जवार का त़लबगार हूं। मैं ने अपनी मुख़्तसर सी ज़िन्दगी में दुन्या के बहुत नशीबो फ़राज़ देखे हैं, इख़्लास कम और दिखावा कसीर, वफ़ा कम और ख़ुशामद ख़त़ीर (या'नी ज़ियादा) है, इस से बढ़ कर भी क्या बे वफ़ाई होगी कि वोह मां बाप जिन्हों ने हज़ार एह़सानात किये होते हैं मगर उन की कोई एक मा'मूली सी बात भी ना गवार गुज़र जाती है तो सारे एह़सानात भुला कर, ना ख़लफ़ औलाद उन को लात मार देती है! आह! शैत़ाने मक्कार व अ़य्यार ने क़ुलूब व अज़्हान में बहुत ज़ियादा ख़राबियां डाल दी हैं। اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** में लाखों लाख मुसल्मान शामिल हैं मगर इन में रूठ टूट कर कुछ अफ़राद को अलग होते भी पाया है, म-दनी माह़ोल से दूरी के बा'द बा'ज़ों की बे अ़-मलियों का सिल्सिला भी सामने आया है, बा'ज़ नाराज़ इस्लामी भाइयों ने अपना अपना जुदागाना ''ग्रूप'' भी बनाया है, बा'ज़ो ने मेरे ख़िलाफ़ बहुत कुछ कहा, लिखा

और दा'वते इस्लामी की भी जी भर कर मुख़ा-ल-फ़तें की हैं मगर اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ येह लिखने तक दा'वते इस्लामी बराबर तरक़्क़ी के मनाज़िल तै कर रही है और कोई भी ग्रूप ब ज़ाहिर अब तक दा'वते इस्लामी से आगे बढ़ना कुजा बराबरी भी नहीं करने पाया। मैं ने तन्ज़ीमी कामों में ज़िन्दगी का काफ़ी हिस्सा गुज़ारा है, लिहाज़ा अपने तज्रिबात की रोशनी में तमाम इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों की ख़िदमतों में महज़ आख़िरत की भलाई के पेशे नज़र हाथ जोड़ कर **म-दनी वसिय्यत** करता हूं : मेरी येह बात हमेशा के लिये गिरेह में में बांध लीजिये कि मेरे जीते जी भी और मेरे मरने के बा'द भी **दा'वते इस्लामी** में एक बार शुमूलिय्यत कर लेने के बा'द दा'वते इस्लामी का तशख़्ख़ुस (म-सलन सब्ज़ इमामा शरीफ़ लिबास वग़ैरा) रखते हुए त़रीक़ए कार से हट कर हरगिज़ किसी क़िस्म का "मु-तवाज़ी ग्रूप" मत बनाइयेगा, दीन के काम के ह़वाले से भी अगर आप ने अपना कोई अलग सिल्सिला शुरूअ़ किया तो **ग़ीबतों, तोहमतों,** बद गुमानियों, दिल आज़ारियों, आपस की दुश्मनियों, बाहमी नफ़रतों वग़ैरा वग़ैरा से ख़ुद को बचाना क़रीब क़रीब ना मुम्किन हो जाएगा

बल्कि हो सकता है कि बे शुमार मुसल्मान इस त़रह़ की आफ़तों की लपेट में आ जाएं। अगर कोई येह समझे कि दा'वते इस्लामी से जुदा होने के बा'द अलग ग्रूप बना कर मैं ने तो फुलां फुलां दीन का बहुत भारी काम सर अन्जाम दिया है, तो मैं उस की तवज्जोह इस त़रफ़ दिलाना चाहूंगा कि वोह येह भी ग़ौर कर ले कि जुदा होने के बाइ़स कहीं ग़ीबतों वग़ैरा गुनाहों की नुहूसतों में तो नहीं फंसा था ? अगर नहीं फंसा था तो सद करोड़ मुबारक ! और अगर फंसा था तो फिर ज़मीर ही से पूछ ले कि मेरा फुलां फुलां मुस्तह़ब दीनी कामों का वज़्न ज़ियादा या इन दीनी कामों के ज़िम्न में जिन **ग़ीबतों** वग़ैरा ह़राम चीज़ों का सुदूर हुवा उन का वज़्न ज़ाइद ? अगर दिल ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का ह़ामिल हुवा, इ़ल्मे दीन का फ़ैज़ान रहा और ज़मीर ज़िन्दा पाया तो येही जवाब मिलेगा कि यक़ीनन ज़िन्दगी भर के मुस्तह़ब कामों के मुक़ाबले में सिर्फ़ एक बार की हुई गुनाह भरी **ग़ीबत** ही ज़ियादा वज़्नी है कि मुस्तह़ब काम न करने पर अ़ज़ाब की कोई वईद नहीं जब कि ग़ीबत पर अ़ज़ाब का इस्तिह़्क़ाक़ है। मा'लूम हुवा एक

बार **दा'वते इस्लामी** में शामिल हो जाने के बा'द निकलने या निकाले जाने के बा'द जुदागाना ग्रूप बनाने में مِن حَيثُ الۡمَجۡمُوع (या'नी मज्मूई हैसिय्यत से) नुक़्सान ही का पहलू ग़ालिब है।

फ़तावा र-ज़विय्या के अहम्म इक़्तिबासात

अगर सच पूछिये तो ऐसा दीनी काम जिस से मुसल्मानों में नफ़रत की कैफ़िय्यत जनम लेने लगे और उस का करना फ़र्ज़, वाजिब या सुन्नते मुअक्कदा न हो तो उस काम को तर्क करना ही मुनासिब है अगर्चे अफ़्ज़ल व मुस्तहब हो। ★ चुनान्चे एक मक़ाम पर मेरे आक़ा आ'ला हज़रत رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه मुसल्मानों के इत्तिहाद की अहम्मिय्यत को उजागर करने के लिये नक़्ल फ़रमाते हैं : "लोगों की तालीफ़े क़ल्बी (या'नी दिलजूई) और उन को मुज्तमअ़ (मुत्तहिद) रखने के लिये **अफ़्ज़ल को तर्क करना** इन्सान के लिये जाइज़ है ताकि लोगों को नफ़रत न हो जाए जैसा कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम عليه اَفضَلُ الصَّلٰوةِ وَ التَّسليم ने बैतुल्लाह शरीफ़ की इमारत को इस लिये हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ की बुन्यादों पर क़ाइम रखा ताकि नौ मुस्लिम होने की वजह से अहले क़ुरैश इस

की नई बुन्यादों पर की जाने वाली ता'मीर को नफ़रत की निगाह से न देखें । तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इज्तिमाअ़ (इत्तिह़ाद) को क़ाइम रखने की मस्लह़त को मुक़द्दम समझा ।" (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 7, स. 680) ★ तन्फ़ीरे मुस्लिमीन (या'नी मुसल्मानों को नफ़रत में मुब्तला करने) से बचने के लिये ज़रूरतन मुस्तह़ब को तर्क कर देने का हुक्म है । जैसा कि मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه मुसल्मानों के दरमियान प्यार व मह़ब्बत की फ़ज़ा क़ाइम रखने का एक म-दनी उसूल बयान करते हुए फ़रमाते हैं : "ईताने मुस्तह़ब व तर्के ग़ैरे औला पर मुदाराते ख़ल्क़ व मुराआ़ते क़ुलूब को अहम्म जाने और फ़ितना व नफ़रत व ईज़ा व वह़शत का बाइ़स होने से बहुत बचे ।" (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 4, स. 528) ★ मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه शरीअ़ते मुत़ह्हरा का क़ाइ़दा बयान करते हुए फ़रमाते हैं : **دَرْءُ الْمَفَاسِدِ اَهَمُّ مِنْ جَلْبِ الْمَصَالِحِ** या'नी ख़राबियों के अस्बाब दूर करना ख़ूबियों के अस्बाब ह़ासिल करने से अहम्म है ।

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 9, स. 551)

जिस ने तशख़्ख़ुस तब्दील कर लिया !

रहे वोह ह़ज़रात जो दा'वते इस्लामी का तशख़्ख़ुस तर्क चुके और बिला इजाज़ते शर-ई **दा'वते इस्लामी** की किसी क़िस्म की मुख़ा-लफ़त भी नहीं करते और **ग़ीबतों**, तोह्मतों और बद गुमानियों वग़ैरा में पड़े बग़ैर अपनी तरकीब से दीनी ख़िदमात अन्जाम दे रहे हैं, अल्लाह तआ़ला उन की काविशों को क़बूल फ़रमाए। मगर वोह जो तशख़्ख़ुस तब्दील कर के अलग ग्रूप बनाने के बा'द बिला इजाज़ते शर-ई दा'वते इस्लामी की मुख़ा-लफ़त कर के नेकी की दा'वत आ़म करने वाली इस म-दनी तह़रीक को कमज़ोर करने की मज़्मूम कोशिशों में मस्रूफ़ हों, इस मक़्सद के लिये ग़ीबतों, तोह्मतों, बोहतान तराशियों, बद गुमानियों, ऐ़ब दरियों, बुरे चरचों, इल्ज़ाम तराशियों और चुग़्लियों को अपना हथियार बना लें और इसे अपने ज़ो'मे फ़ासिद में दीन की बहुत बड़ी ख़िदमत तसव्वुर करें, ऐसों को संभल जाना चाहिये कि येह दीन की ख़िदमत नहीं, इन्तिहाई द-रजे की मज़्मूम ह़-र-कत है बल्कि शरअ़न इन ना जाइज़ कामों का इरतिकाब कर के अपने नामए आ'माल को गुनाहों

से पुर करना है। यूंही जो तशख़्ख़ुस बर क़रार रखते हुए भी बिला इजाज़ते शर-ई दा'वते इस्लामी की मुख़ा-लफ़त करेगा और लोगों को मु-तनफ़्फ़िर कर के (या'नी नफ़रत दिला कर) दा'वते इस्लामी और इस के त़रीक़ए कार को नुक़्सान पहुंचाना उस का मक़्सद होगा वोह भी फ़े'ले ना जाइज़ का मुर-तकिब ठहरेगा।

बुरा चरचा करना ह़राम है

देखा येह गया है कि जब कोई शख़्स किसी की मुख़ा-लफ़त पर उतर आता है तो ख़्वाह म ख़्वाह उस पर तन्क़ीदें करता, बाल की खाल उतारता और उस की ख़ामियों या ख़त़ाओं का बुरा चरचा करता फिरता है (मगर जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बचाए)। जब उन की आपस में बनती थी तो इसे गोया उस के पसीने में से भी ख़ुश्बू आती थी अब बा'दे मुख़ा-लफ़त उस का इ़त्र भी बदबूदार लगता है। याद रखिये ! किसी मुबल्लिग़ और ख़ुसूसन बिल ख़ुसूस सुन्नी आ़लिम की किसी ख़ामी या ख़त़ा को बिला मस्लह़ते शर-ई किसी पर ज़ाहिर करना या लोगों में उस का बुरा चरचा करना नेकी की दा'वत और इस्लाम की तब्लीग़ के काम के मुआ़-मले में बहुत,

बहुत और बहुत नुक़्सान देह और आख़िरत में बाइसे अ़ज़ाब है, मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द २९ सफ़ह़ा 594 पर फ़रमाते हैं : "और अहले सुन्नत से ब तक़्दीरे इलाही जो ऐसी लग़्ज़िशे फ़ाह़िश वाक़ेअ़ हो उस का इख़्फ़ा (या'नी छुपाना) वाजिब है कि مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ लोग उन से बद ए'तिक़ाद होंगे तो जो नफ़्अ़ उन की तक़्रीर और तह़रीर से इस्लाम व सुन्नत को पहुंचता था उस में ख़लल वाक़ेअ़ होगा । इस की इशाअ़त, इशाअ़ते फ़ाह़िशा (या'नी बुरा चरचा करना) है। और इशाअ़ते फ़ाह़िशा ब नस्से क़ुरआने अ़ज़ीम ह़राम, क़ालल्लाहु तआ़ला :

اِنَّ الَّذِيْنَ يُحِبُّوْنَ اَنْ تَشِيْعَ الْفَاحِشَةُ فِى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۙ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ؕ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह लोग जो चाहते हैं कि मुसल्मानों में बुरा चरचा फैले उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है दुन्या और आख़िरत में।"

(पारह : 18, अन्नूर : 19)

(फ़तावा र-ज़विय्या , जि. 29, स. 594)

दा'वते इस्लामी से बिछड़ने वालों के लिये इत्मामे हुज्जत

जो आज तक मुझ से नाराज़ हो कर या मर्कज़ी मजलिसे शूरा से रूठ कर जुदा हो गए, उन में से जिन जिन की मेरी वजह से किसी क़िस्म की ह़क़ त-लफ़ी हुई हो उन से हाथ जोड़ कर मुआ़फ़ी का त़लबगार हूं, दोनों ग़ुलाम ज़ादे और निगरान व अराकीने शूरा भी मुआ़फ़ी मांग रहे हैं, मुझे और इन्हें **ख़ुदा व मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये मुआ़फ़ मुआ़फ़ और मुआ़फ़ फ़रमा दें। हम सब ने भी रिज़ाए **ख़ुदा व मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये उन सब को जिन्हों ने ह़क़ त-लफ़ियां की हों उन को मुआ़फ़ किया। नाराज़ हो कर या इख़्तिलाफ़ कर के जिन्हों ने अपनी अपनी तन्ज़ीमें क़ाइम कीं, जुदागाना ग्रूप बनाए उन सभी को खुले दिल से दा'वत देता हूं कि अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का वासित़ा मुझ से **सुल्ह़** फ़रमा लें, मह्ज़ रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ की ख़ात़िर, मैं हर नाराज़ मुसल्मान से ग़ैर मश्रूत़ त़ौर पर भी सुल्ह़ के लिये तय्यार हूं। हां जो तन्ज़ीमी इख़्तिलाफ़ात को मुज़ाकरात के ज़रीए ह़ल कर के **सुल्ह़** करना चाहते

हैं उन के लिये भी मेरे और दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के दरवाज़े खुले हैं, जल्दी राबिता कीजिये और मर्कज़ी मजलिसे शूरा के साथ बैठ जाइये। अगर आप हुक्म फ़रमाएंगे तो मुम्किना सूरत में اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ शूरा के साथ साथ मैं भी बैठ जाऊंगा। आइये, आ जाइये, **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत और ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की निगाहे इ़नायत से शैत़ान के हथकन्डों को नाकाम बनाते हैं, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ मिल जुल कर दीन का ख़ूब म-दनी काम करेंगे।

अल्लाह करे दिल में उतर जाए मेरी बात

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू गवाह रहना

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! तू गवाह रहना मैं ने अपने बिछड़े हुए इस्लामी भाइयों के लिये सुल्ह़ का पैग़ाम मुश्तहर कर दिया है। ऐ मेरे प्यारे प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरे नाराज़ इस्लामी भाइयों के दिलों में मुझ मिस्कीन के लिये रह़्म डाल दे कि वोह मुझे मुआ़फ़ी की भीक दे कर मुझ से सुल्ह़ कर लें, या **अल्लाह**

عَزَّوَجَلَّ ! तू मेरे दिल के ह़ाल से बा ख़बर है कि इस सुल्ह़ की दर-ख़्वास्त में मेरा अस्ल मक़्सद सिर्फ़ सिर्फ़ और सिर्फ़ उख़रवी मफ़ाद है, मैं मरने से पहले पहले फ़क़त़ तेरी रिज़ा के लिये हर नाराज़ मुसल्मान से सुल्ह़ करना और अपने रूठे हुए इस्लामी भाइयों को मना लेना चाहता हूं। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तेरी **ख़ुफ़्या तदबीर** से बहुत डरता हूं, ऐ मेरे प्यारे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! तू कभी भी मुझ से नाराज़ न होना, मेरे पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! मेरा ईमान एक लम्ह़े के करोड़वें ह़िस्से के लिये भी कभी मुझ से जुदा न हो, या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरी और मेरे रूठे हुए तमाम इस्लामी भाइयों समेत हर दा'वते इस्लामी वाले और वाली की बे ह़िसाब बख़्शिश फ़रमा। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े सारी उम्मत की मग़फ़िरत फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ! हमारी सफ़ों में इत्तिह़ाद पैदा फ़रमा। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें ज़ेह्नी हम आहन्गी नसीब फ़रमा, या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें एक साथ मिल कर इख़्लास के साथ तेरे दीन की ख़िदमत की सआ़दत इनायत फ़रमा। **اٰمين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين** صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

सुन्नतें आ़म करें दीन का हम काम करें

नेक हो जाएं मुसल्मान मदीने वाले

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

تُوْبُوْ اِلَی اللّٰہ ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ग़ीबत के ख़िलाफ़ ए'लाने जंग

आह ! "ग़ीबत" ने उम्मत की अक्सरिय्यत को निहायत शिद्दत के साथ अपनी हिरासत में लिया हुवा है, शैत़ान ग़ीबत के ज़रीए भरपूर त़रीक़े पर लोगों को जहन्नम की त़रफ़ धकेलता चला जा रहा है। होश में आइये ! **ग़ीबत** के ख़िलाफ़ ए'लाने जंग कर के एक दम मोरचे पर डट जाइये ! जिस जिस ने अब तक जिस क़दर **ग़ीबतें** की हों उन की तौबा और मुआ़फ़ी तलाफ़ी में लग जाए, अ़ज़्मे मुसम्मम कीजिये कि **"न ग़ीबत करेंगे न सुनेंगे "** اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अफ़्सोस सद करोड़ अफ़्सोस ! **ग़ीबत** हमारे म-दनी माह़ोल को दीमक की त़रह़ चाट रही है लिहाज़ा दा'वते इस्लामी के तमाम ज़िम्मेदार इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों की ख़िदमतों में मेरी हाथ जोड़ कर "म-दनी इल्तिजा" है कि **ग़ीबत** के ख़िलाफ़ ए'लाने जंग के ज़िम्न में ग़ीबतों के दरवाज़ों पर ताले लगाते चले

जाइये, अब तक जो भी आप की ज़िम्मेदारी के दौरान म-दनी माहोल से दूर हुए, उन के मुआ़-मले में 112 बार ग़ौर कर लीजिये कि कहीं ऐसा तो नहीं कि उन्हों ने आप की **ग़ीबतें** की हों और आप को गुस्सा आ जाने की वजह से या ख़ुद आप ने उन की **ग़ीबतें** की हों इस सबब से वोह दिल बरदाश्ता हो कर घर जा बैठे हों। अगर ऐसा है तो अच्छी अच्छी निय्यतें कर के बराए **रिज़ाए रब्बे अक्बर** عَزَّوَجَلَّ फ़ौरन से पेशतर मगर बुला कर नहीं, ख़ुद उन के पास जा कर हाथ जोड़ कर पाउं पकड़ कर ऐ काश ! रो रो कर मुआ़फ़ी तलाफ़ी की तरकीब बना कर उन्हें मना कर राज़ी कर के गले लगा लीजिये। बल्कि हर बिछड़े हुए की तलाश कर के उन के पास भी ख़ुद जा कर हाथ बांध कर, मिन्नत व समाजत कर के उन्हें दोबारा म-दनी माहोल में ले आइये और इन्फ़िरादी कोशिश के ज़रीए़ उन सभों को फिर से सुन्नतों की ख़िदमतों में मस्रूफ़ कर दीजिये। (जिन पर तन्ज़ीमी ज़िम्मेदारी नहीं वोह भी इसी त़रह़ करें, हां जिन पर तन्ज़ीमी पाबन्दी लगी हो उन को मत छेड़िये, उन के बारे में बड़े ज़िम्मेदारान जो तन्ज़ीमी फ़ैसला करें उन पर अ़मल कीजिये)

ऐ ख़ासए ख़ासाने रुसुल वक़्ते दुआ़ है

उम्मत पे तेरी आ के अ़जब वक़्त पड़ा है

छोटों में इ़ताअ़त है न शफ़्क़त है बड़ों में

प्यारों में महब्बत है न यारों में वफ़ा है

जो कुछ हैं वोह सब अपने ही हाथों के हैं करतूत

शिक्वा है ज़माने का न क़िस्मत का गिला है

देखे हैं येह दिन अपनी ही ग़फ़्लत की बदौलत

सच है कि बुरे काम का अन्जाम बुरा है

हम नेक हैं या बद हैं फिर आख़िर हैं तुम्हारे

निस्बत बहुत अच्छी है अगर ह़ाल बुरा है

तदबीर संभलने की हमारे नहीं कोई

हां एक दुआ़ तेरी कि मक़्बूले ख़ुदा है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नाज़ुक फ़ैसले

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शबे बराअत (शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म की पन्दरहवीं रात) की अ़-ज़मत के क्या कहने ! मगर येह

रात **नाज़ुक** भी है ! इस रात न जाने किस की क़िस्मत में क्या लिख दिया जाए, आह ! बा'ज़ अवक़ात बन्दा ग़फ़्लत में पड़ा रह जाता है और उस के बारे में कुछ का कुछ हो चुका होता है । चुनान्चे **ग़ुन्यतुत्ता़लिबीन** में है :

''बहुत से कफ़न धुल कर तय्यार रखे होते हैं मगर कफ़न पहनने वाले बाज़ारों में घूम फिर रहे होते हैं। बहुत से लोग ऐसे होते हैं कि उन की क़ब्रें खुदी हुई तय्यार होती हैं मगर उन में दफ़्न होने वाले **ख़ुशियों** में मस्त होते हैं। बहुत से लोग हंस रहे होते हैं ह़ालां कि उन की हलाकत का वक़्त क़रीब आ चुका होता है। बहुत से मकानात की ता'मीर का काम मुकम्मल होने वाला होता है मगर मालिके मकान की मौत का वक़्त भी क़रीब आ चुका होता है।''

(ग़ुन्यतुत्ता़लिबीन, जि. 1, स. 251)

आगाह अपनी मौत से कोई बशर नहीं
सामान सो बरस का है पल की ख़बर नहीं

अ़दावत वाले की शामत

ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से

रिवायत है, सुल्त़ाने मदीनए मुनव्वरह, शहन्शाहे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : **''शा'बान की पन्दरहवीं शब में अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तमाम मख़्लूक़ की त़रफ़ तजल्ली फ़रमाता है और सब को बख़्श देता है मगर काफ़िर और अ़दावत वाले को (नहीं बख़्शता) ।''

(अल एह़सान बि तरतीब सह़ीह़ इब्ने ह़ब्बान, जि. 7, स. 470, ह़दीस : 5636)

मुआ़फ़ी तलाफ़ी कर लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिन दो मुसल्मानों में कोई दुन्यवी अ़दावत हो तो उन्हें चाहिये कि शबे बराअत आने से पहले मुआ़फ़ी तलाफ़ी कर लें ताकि मग़्फ़िरते इलाही عَزَّوَجَلَّ उन्हें भी शामिल हो । अह़ादीसे मुबा-रका की बिना पर **بِحَمْدِہٖ تَعَالٰی** मदी-नतुल मुर्शिद बरेली शरीफ़ में मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने येह त़रीक़ा मुक़र्रर फ़रमाया था कि 14 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म को रात आने से पहले मुसल्मान आपस में मिलते और एक दूसरे से क़ुसूर मुआ़फ़ करवाते थे । म-दनी इल्तिजा है कि हर

जगह इस्लामी भाई भी ऐसा ही करें और इस्लामी बहनें भी फ़ोन वग़ैरा के ज़रीए आपस में मुआफ़ी तलाफ़ी कर लें।

पयामे आ'ला ह़ज़रत

शबे बराअत क़रीब है, इस रात तमाम बन्दों के आ'माल ह़ज़रते इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ में पेश होते हैं। मौला عَزَّوَجَلَّ ब तुफ़ैले हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर علیه اَفْضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسلیم मुसल्मानों के ज़ुनूब (गुनाह) मुआफ़ फ़रमाता है मगर चन्द इन में वोह दो मुसल्मान जो बाहम दुन्यवी वजह से रन्जिश रखते हैं फ़रमाता है, इन को रहने दो। जब तक आपस में सुल्ह़ न कर लें। एक दूसरे के ह़ुक़ूक़ अदा कर दें या मुआफ़ करा लें कि बि इ़ज़्निही तआ़ला ह़ुक़ूक़ुल इ़बाद से सह़ाइफ़े आ'माल (या'नी आ'माल नामे) ख़ाली हो कर बारगाहे इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ में पेश हों। ह़ुक़ूक़े मौला तआ़ला के लिये तौबए सादिक़ा काफ़ी है। اَلتَّائِبُ مِنَ الذَّنْبِ كَمَنْ لَّا ذَنْبَ لَهٗ (या'नी गुनाह से तौबा करने वाला ऐसा है जैसे उस ने गुनाह किया ही नहीं) ऐसी ह़ालत में बि इ़ज़्निही तआ़ला ज़रूर इस शब में उम्मीदे मग़्फ़िरते ताम्मह है ब शर्ते़ कि सिह़्ह़ते अ़क़ीदा। وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْم। येह सुन्नते मुसा–ल–ह़ते इख़्वान

(या'नी भाइयों में सुल्ह़ करवाना) व मुआ़फ़िये हुक़ूक़ बि ह़म्दिही तआ़ला यहां सालहाए दराज़ से जारी है। उम्मीद है कि आप भी वहां के मुसल्मानों में इजरा कर के

مَنْ سَنَّ فِیْ الْاِسْلَامِ سُنَّةً حَسَنَةً فَلَهٗ اَجْرُهَا وَاَجْرُ مَنْ عَمِلَ بِهَا اِلٰی یَوْمِ الْقِیٰمَةِ لَا یَنْقُصُ مِنْ اُجُوْرِ هِمْ شَیْءٌ

(या'नी जो इस्लाम में अच्छी राह निकाले उस के लिये इस का सवाब है और क़ियामत तक जो उस पर अ़मल करें उन सब का सवाब हमेशा उस के नामए आ'माल में लिखा जाए बग़ैर इस के कि उन के सवाबों में कुछ कमी आए) के मिस्दाक़। और इस फ़क़ीर के लिये अ़फ़्वो आ़फ़िय्यते दारैन की दुआ़ फ़रमाएं। फ़क़ीर आप के लिये दुआ़ करता है और करेगा। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ सब मुसल्मानों को समझा दिया जाए कि वहां न ख़ाली ज़बान देखी जाती है न निफ़ाक़ पसन्द है। सुल्ह़ व मुआ़फ़ी सब सच्चे दिल से हो। والسلام

फ़क़ीर अह़मद रज़ा क़ादिरी अज़ बरेली

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मैं ने इल्यास क़ादिरी को मुआ़फ़ किया

तमाम इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों से दस्त बस्ता आ़जिज़ाना अ़र्ज़ करता हूं कि अगर मैं ने नीज़ ग़ुलाम ज़ादों और निगरान व अराकीने मर्कज़ी मजलिसे शूरा में से जिस जिस ने आप में से किसी की ग़ीबत की हो, तोहमत धरी हो, डांट पिलाई हो, किसी त़रह़ से दिल आज़ारी की हो मुझे और उन्हें मुआ़फ़ मुआ़फ़ और मुआ़फ़ फ़रमा दीजिये। जान व माल, अहलो इ़याल और इ़ज़्ज़त आबरू में दुन्या के अन्दर जो छोटे से छोटे और बड़े से बड़े हुक़ूक़ुल इ़बाद (या'नी बन्दों के हुक़ूक़) तसव्वुर किये जा सकते हैं, फ़र्ज़ कीजिये कि वोह हुक़ूक़ मैं ने, ग़ुलाम ज़ादों और निगरान व अराकीने शूरा ने आप के तलफ़ (या'नी ज़ाएअ़) कर दिये हैं, उन तमाम हुक़ूक़ को ज़ेह्न में रखते हुए हमारे सबब से तलफ़ शुदा हुक़ूक़ मुआ़फ़ मुआ़फ़ और मुआ़फ़ फ़रमा कर सवाबे अ़ज़ीम के ह़क़दार बनिये। हाथ बांध बर म-दनी इल्तिजा है कि कम अज़ कम एक बार दिल की गहराई के साथ कह दीजिये : "मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी, ग़ुलाम ज़ादों और निगरान व अराकीने शूरा को मुआ़फ़ किया।" हम सब ने भी हमारी तमाम छोटी बड़ी ह़क़ त-लफ़ियां करने वालों को अल्लाह व

रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمْ की ख़ाति़र मुआ़फ़ किया।

क़र्ज़ ख़्वाहों से म-दनी इल्तिजा

जिस का मुझ पर क़र्ज़ आता हो या मैं ने कोई चीज़ आ़रिय्यतन ली हो और वापस न लौटाई हो तो वोह दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के निगरान या ग़ुलाम ज़ादों से रुजूअ़ करे, अगर वुसूल करना नहीं चाहता तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये मुआ़फ़ी की भीक से नवाज़ कर सवाबे आख़िरत का ह़क़दार बने। बा'ज़ लोग मेरे भी मक़रूज़ हैं, उन को मैं ने अपने तमाम ज़ाती क़र्ज़े मुआ़फ़ किये। या इलाही !

तू बे ह़िसाब बख़्श कि हैं बे शुमार जुर्म
देता हूं तुझ को वासित़ा शाहे ह़िजाज़ का

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

تُوبُوا اِلَی اللّٰہ ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

11 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1430 हि.

3-8-2009

ग़ीबत ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।

हम तो ग़ीबत करें न सुनें

एक चुप सो सुख